मन के दस कमरे

अंतर्ज्ञान — पूर्वाभास

एक ऐसा घर है जिसमें हम सब रहते हैं, बिना कभी उसे चुने।

उसका कोई पता नहीं। वह किसी नक़्शे पर नहीं मिलता। फिर भी हम उसे किसी भी सच्चे घर से बेहतर जानते हैं।

भीतर दस दरवाज़े हैं।

कुछ हम हर दिन खोलते हैं, बिना जाने।

कुछ हम बंद रखते हैं, यह दिखावा करते हुए कि उनसे हमारा कोई नाता नहीं।

और फिर कुछ कमरे ऐसे हैं जिन्हें हमने ख़ुद नहीं बनाया, फिर भी वे किसी तरह हमारे भीतर बसे रहते हैं।

यह कोई सिद्धांत नहीं है।

यह मनोविज्ञान की कोई किताब नहीं जो शेल्फ़ पर धूल खा रही हो।

यह उस आदमी का विवरण है जो इन दस कमरों में एक-एक करके चला, अक्सर यह जाने बिना कि वह कहाँ है, और जो अब, कुछ और वर्षों के बोझ के साथ, उन्हें ठीक वैसे ही बयान करने की कोशिश कर रहा है जैसे उसने उन्हें जिया।

दस दरवाज़े। मैंने सब खोले।

कुछ जिज्ञासा से। कुछ अनिच्छा से। कुछ तब जब लौटना पहले ही बहुत देर हो चुका था।

अगर ये कमरे परिचित लगें, तो यह इसलिए नहीं कि वे मेरी कहानी कहते हैं।

यह इसलिए है क्योंकि, कहीं गहरे में, वे तुम्हारी भी कहानी कहते हैं।

फर्डिनांडो

अंतर्ज्ञान — पूर्वाभास

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

औरतें—पहली भी, इकलौती भी—हमेशा मुझसे पूछतीं: “तुम्हें कैसे पता चला?” इस सवाल का जवाब मुझे हमेशा असहज कर देता। क्योंकि सच तो यह है कि मुझे पता नहीं था। मैंने देखा था। बस एक पल के लिए। जैसे पहाड़ के पीछे कौंधती बिजली।

अंतर्ज्ञान उस चीज़ का समय से पहले आ पहुँचना है जिसे तर्क बहुत बाद में समझ पाएगा। यह एक ऐसी खिड़की है जो आपके झाँकने से पहले ही खुलकर बंद हो जाती है। बहुत-से लोग इसे एक वरदान मानते हैं। मैं इसे सुनने का एक ढंग मानता हूँ। शायद सबसे दुर्लभ ढंग। क्योंकि इसके लिए ख़ामोशी चाहिए—अपने भीतर तक की ख़ामोशी। दुनिया लगातार बोलती रहती है। लोग लगातार बोलते रहते हैं। यहाँ तक कि ख़ामोशी भी बोलती है। अंतर्ज्ञान तब जन्म लेता है जब हम वह सुनना सीख जाते हैं जिसे बाक़ी सब अनसुना कर देते हैं। लहज़े का एक बदलाव। एक चुराई हुई नज़र। एक झिझक। रंग बदलती कोई मौजूदगी। छिपने की कोशिश करता कोई सच। अंतर्ज्ञान अलौकिक को नहीं देखता। वह उसी को देखता है जो पहले से ही मौजूद है। बाक़ी सबसे पहले। इसीलिए वह अक्सर असहज कर देता है। वह तब आ पहुँचता है जब सब अब भी इसके उलट पर यक़ीन किए बैठे होते हैं। और जो बहुत जल्दी सही साबित हो जाए, उसे कोई माफ़ नहीं करता। पर आओ, अंतर्ज्ञान को पूर्वाभास से न गड्डमड्ड करें। अंतर्ज्ञान हमारे साथ-साथ चलता है। पूर्वाभास हमारे ऊपर से गुज़र जाते हैं। एक सुनने से जन्मता है। दूसरे बिना इजाज़त माँगे आ धमकते हैं। एक आपका अपना होता है। दूसरा आपके भीतर से होकर गुज़र जाता है। और अक्सर उसे क़ाबू में नहीं किया जा सकता।

फर्दिनांदो

 © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।